ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 173-174

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

''मदन रस बरसे'' : (बुन्देली ललित निबंध)

1. भानसिंह यादव
2. डॉ0 सरोज गुप्ता

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशिका– हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0) भारत

Received-12.11.2022, Revised-18.11.2022, Accepted-23.11.2022 E-mail: bhansinghvadavtkg1988@gmail.com

सारांशः ***भारतीय साहित्य संस्कृति अध्यात्म एवं दर्शन की जीवंत प्रतिमूर्ति आचार्य पंडित दुर्गा चरण शुक्ल जी ने लोक ओर शास्त्र के अभेद को व्यक्त करते हुए हमारे लोक व्यवहार के पर्व त्यौहारों पेड़ पौधों वनस्पतियों पशु पक्षियों एवं स्थान विशेष की कथाओं को सर्वथा एक नये अर्थ में समझने का अवसर दिया हैं इन्ही में से एक का संग्रह ''मदर रस बरसे'' हैं।***

आचार्य शुक्ल ने मदन रस बरसे ललित निबंध मे विषय प्रधान न होकर विषयी प्रधानता का गुण प्रवाहित किया हैं। इसमें किसी एक विषय पर ध्यान केन्द्रीत न होकर बार बार विषयांतर में जाकर अनेक विषयों का समाहित किया हैं।

कुंजीभूत शब्द– संस्कृति अध्यात्म, दर्शन, जीवंत प्रतिमूर्ति, अभेद, लोक व्यवहार, प्रधानता, बहुव्यंजन, लालित्यमय, सरलता।

पूजनीय लेखक आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल ने मदन रस बरसे के प्रथम निबंध मदन रस बरसे महुआ तरे में वनस्पति के महत्वपूर्ण पादप महुआ के वृक्ष के नीचे बैठे जीव का प्राप्त परमानंद का बड़ी ही सरसता और लालित्य वर्णन किया हैं। लेखक ने महुआ नामक एक वृक्ष के नीचे बैठे व्यक्ति का जो आनंद प्राप्त होता हैं तथा वृक्ष के महत्वता का वर्णन किया हैं। महुआ के वृक्ष पर विभिन्न पक्षी बैठे हैं, उनकी आवाज सुनकर ऐसा लगता हैं कि वृक्ष के फूल का रसास्वादन करते हुए गीत गा रहे हैं, जिसका आनंद हर व्यक्ति को लेना चाहता हैं। प्रातः काल के मधुर बेला में एक प्रकृति प्रेमी वृक्ष के नीचे बैठा व्यक्ति महुआ के फल महुआ को चूस कर उसका रसास्वादन करता हैं। उसको महुआ मेवा के समान स्वादिष्ट हैं। महुआ का फल गुलगुच को खाकर जिसमें जलेबी सी मिठास हैं गुलगुच के बीज में गुली महुआ का फल एकत्र कर महुआ से खाद्य तेल निकालकर विभिन्न पकवान व्यंजन तलकर बहुव्यंजन तैयार होते हैं। महुआ फूल से डबरी मुरक्का से लटा फल से बहुव्यंजन विभिन्न ऋतुओं के अनुसार तैयार कर भोज्य पदार्थ के रूप में उपयोग करता हैं। निवास के लिये महुआ ग्रीष्म ऋतु में ठंडा तथा शीत ऋतु में गर्म होने से मनुष्य महुआ के नीचे निवास करता था।

आचार्य शुक्ल जी ने मदन रस बरसे निबंध में प्रकृति के अभिन्न पादपो में महुआ नामक वृक्ष की प्राकृतिक ऐतिहासिक धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक महत्व का लालित्यमय प्रस्तुतिकरण किया हैं।

लेखक ने महुआ वृक्ष जो कि उष्ण कटिबन्धीय वृक्ष हैं, जो उत्तर भारत के मैदानी इलाको सहित मध्यप्रदेश में बड़ें पैमानें पर पाया जाता हैं। यह वृक्ष तेजी से बड़ने वाला वृक्ष हैं जो लगभग 25 मीटर ऊंचा उन्नत शाखाओं सहित विशालकाय वृक्ष हैं इसकी पत्तिया पांच सात अंगुल चौड़ी, दस बारह अंगुल लंबी दोनो ओर नुकीली होती हैं महुआ वृक्ष प्राकृतिक जलवायु से अनुकूलन सहजता से कर लेता हैं इस वृक्ष की अदभुत विशेषता हैं कि इसकी छाया शीत ऋतु में गर्म तथा ग्रीष्म ऋतु शीतल होती हैं। महुआ वृक्ष का महत्व हमारे जीवन में संस्कृत, हिन्दी ग्रंथों, साहित्यों में वर्णन किया हैं।

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि को पम्पा सरोवर के तट पर महुआ की बार बार सुगंध आ रही हैं – ''पम्पा तीरे रूहाश्चे में संसिक्तः मधुगन्धिनः'' उनको ये भी पता है कि देश के हर क्षेत्र में महुआ के महावन हैं। ''मधुकानां महावनम''

गौतम ऋषि महुआ के आनंद में डूब कर गाने लगे ''मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्तु ओषधी।'' सुश्रुत ऋषि ने लिखा हैं कि महुआ के फल वीर्य वर्धक तृषाशांत करने वाले और पोष्टिक होते हैं।

लेखक महुआ के वृक्ष को ऋषि, मुनियों, पुण्य स्थानो में माना हैं लेखक ने विभिन्न भारतीय त्यौहार, उत्सव में महुआ के महत्व को प्रस्तुत किया हैं।

भाद्रपद माह हलषष्ठी भगवान कृष्ण के अग्रज हलधर बलदाऊ के जयंती पर महुआ के विभिन्न अंगों, डालिया, पत्तें, तना, फूल, फल की पूजा की जाती हैं जिसमें देवताओं का महुआ के फल से बहुव्यंजन प्रसाद के रूप में चढाया जाता हैं। प्रसाद वितरीत करते हैं, महुआ से बहुव्यंजन औषधिया बनाई जाती हैं।

आचार्य लिखते हैं कि ''महुआ बुन्देलखंड का व्यंजक व्यक्तित्व कुछ वृक्ष होते हैं जो जनपदो और अंचलो की संस्कृति को व्यक्त करते हैं। महुआ बुंदेली व्यक्तित्व का प्रतीक हैं'' महुआ पर्यावरण शुद्धता के लिये अपनी विशिष्ट पहचान रखता हैं इस वृक्ष पर विभिन्न जीव – बंदर तथा महुआ चूसने वाला लंबी पूछ का जीव निवास करते हैं। वृक्ष की डालियो पर विभिन्न पक्षी अपना घोसला बनाकर रात्रि निवास करते हैं। तनों में घर बना तोते रहते हैं। महुआ के नीचे आदिकाल से मानव अपने निवास के रूप में उपयोग करते आ रहे हैं। इस प्रकार महुआ सभी जीव–जन्तुओं, पक्षी, मानव का आश्रय स्थान रहा हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

महुआ के वृक्ष अपनी लंबी उम्र में बहुउपयोगी हैं। महुआ से छाया इसके फल को पक्षी मानव रसास्वादन कर चूसते हैं। महुआ का फल सभी जीव जैसे– गाय, बंदर खाते हैं, चींटी से लेकर विशालकाय पशु सभी पक्षी समेत मानव भी महुआ के फल का रसास्वादन करता हैं।

''महुआ मेवा–बेर कलेवा''

आदिकाल से मानव प्रातः कालीन स्वल्प आहार के रूप में मानव महुआ के फूल का उपयोग करता आ रहा हैं महुआ का फल के ऊपरी छिलका, जिसे बुंदेली बोली में गुलेंदा कहा जाता हैं, बहुत मीठा होता हैं। जिसे पशु–पक्षी सहित मानव बड़ें ही चाव से खाता हैं। बुंदेली कहावत हैं– पिता–पुत्र का एक ही नाम माता का दूसरा महुआ का फल जिसे बुंदेली में गुली कहा जाता हैं, जिसको सुखाकर पिराई करके तेल निकाला जाता हैं, जिससे आदिकाल से मानव बहुव्यंजन बनाने, शरीर पर मालिस करने तथा स्नेहक के रूप में उपयोग करते आ रहा हैं। महुआ का मानव के जीवकोपार्जन में सहायता करते आ रहा हैं। महुआ का फल अपनी बहु उपयोगिता के कारण हर वर्ष बिना सिंचाई, बुबाई किये आय का प्रमुख स्रोत हैं।

भारतीय संस्कृति की आत्मा गांव में सामाजिक निर्णय महुआ वृक्ष के नीचे बैठकर अपने निर्णय सर्व–सहमति से लेते आ रहे हैं।

अर्थात– महुआ– पेड़ का नाम।
महुआ– फूल का नाम।
गुली– फल का नाम (मां का नाम) ।

लेखक ने महुआ के बहुउपयोगिता प्रासंगिकता को सजीव चित्रण किया हैं, महुआ हमारे प्राकृतिक, धार्मिक, सामाजिक, औषधिय, प्राकृतिक रूप में पारिस्थितिक संतुलन के लिये धार्मिक रूप से ऋषि मुनियों की तपोभूमि पूजा सामाजिक रूप से समाज के एक स्थान पर बैठकर निर्णय लेने औषधिय रूप से विभिन्न उपयोग औषधि रूप से आय का स्रोत हैं। प्रकृति प्रेम में पशु–पक्षियों का आश्रय स्थल मिट्टी की उर्वरता का स्रोत हैं।

निष्कर्ष– आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी के निबंध '' मदन रस बरसे'' बुदेली ललित निबंध का वर्णन बड़े ही सरल सहज बुंदेली बोली में किया हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ''लोक और वेद के अभिनव आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल'' संपादक– डां. सरोज गुप्ता सागर प्रकाशन– जे.टी.एस. पब्लिकेशन वी –508 , गली नं. 17 विजय पार्क, दिल्ली–110053.
2. मदन रस बरसे – (बुंदेली ललित निबंध) आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल– पृष्ठ क्र. 407.
3. वही पृष्ठ क्र. 408, 421, 425, 432.

*****